अखिल भारतीय कामगार महिला
समन्वय समिति (सी आइ टी यू)

पत्रिका

अक्टूबर 1999

(केवल सदस्यों के लिए)

कामरेड विमल रणदिवे अमर रहें

कामरेड विमल रणदिवे नहीं रहीं। गिर जाने से वे गम्भीर रूप से चोटग्रस्त हो गई थीं, पिछले कुछ महीनों में एक के बाद एक तीन आप्रेशन होने के बाद भी, रीढ़ की इस चोटग्रस्त से वे उबर नहीं सकीं। उनकी हालत लगातार बिगड़ती चली गई और अंतत: 24 जुलाई, 1999 को शाम 5 बजे इस बीमारी से लड़ते हुए उन्होंने अंतिम सांस ली। वे 84 वर्ष की थीं ओर अपने पीछे एक बेटा, पुत्रवधू, दो पोतों के साथ हमारे संगठन और दूसरे संगठनों में ऐसे अनगिनत कामरेड छोड़ गयी हैं, जिन्हें उनके प्रति बहुत अधिक सम्मान और प्यार था।

10 अप्रैल, 1915 को एक मध्यमवर्गीय मराठी परिवार में जन्मी, कामरेड विमल रणदिवे उन कुछ भाग्यशाली लोगों में थीं जिन्होंने अपने रास्ते और 'मिशन' को छोटी उम्र में ही पा लिया था। वे कुल 12-13 वर्ष की उम्र में ही कांग्रेस सेवा दल की वालंटियर के तौर पर राष्ट्रवादी आन्दोलन से जुड़ गयी थीं। 1930 में नागरिक अवज्ञा आन्दोलन के दौरान विदेशी वस्त्रों की दुकान के सामने मोर्चाबंदी करते हुए ब्रिटिश राज की पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार किया। जब ब्रिटिश मजिस्ट्रेट की अदालत में उनकी कम उम्र को देखते हुए कहा, ''तुम राजनीति के बारे में कुछ नहीं जानती हो'', और उन्हें माफी मांगकर घर चले जाने को कहा, तो उन्होंने जवाब दिया, ''हमें मालूम है कि हमने क्या किया है और उसके लिए हम कभी माफी नहीं मांगेंगे।'' उन्हें और उनके साथियों को 6 महीने के कड़े कारावास की सजा दी गयी। इस प्रकार देश की आजादी के संघर्ष में उनकी पहली दीक्षा पूरी हुई। 15 वर्ष की छोटी सी उम्र में ही उनके जीवन की दिशा तय हो गई थी जिससे फिर आजीवन वे टस से मस नहीं हुईं।

दिवंगत कामरेड जी. एस. सरदेसाई, जिन्हें भारतीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में आदर से स्मरण किया जाता है के मार्फत वे साम्यवाद के विचारों के सम्पर्क में आयीं। 1930 के आन्दोलन की लहर उतार पर थी और नौजवान पीढ़ी जिसका वे हिस्सा थी खिन्न थी। ऐसे में मार्क्स और एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के विचारों में उन्हें नई दिशा मिली।

मानवता के भविष्य के पथ को रौशन करने वाले इन अमर विचारों और वास्तविकताओं के साथ विमल रणदिवे ने बिना हिचक अपने कदम आगे बढ़ा दिये। मजदूर वर्ग और तमाम शोषत जनता के हितों के पक्ष में,वर्ग संघर्ष के सिद्धांत के प्रति यह उनकी दूसरी दीक्षा थी, जिस पर उन्होंने आजीवन कोई समझौता नहीं किया।

उन्हें अपनी जीविका उपार्जन करने के साथ अपने भाई और बहन की देखभाल करनी पड़ती थी। इसके लिए उन्होंने स्कूल टीचर की नौकरी की और थियेटर तथा फिल्म अदाकारा के तौर पर काम किया। इस भूमिका में भी उन्होंने अपनी अलग जगह बनाई। लेकिन इस दौर में भी वे अपने आपको भविष्य में एक कम्युनिस्ट की भूमिका के लिए तैयार करती रहीं। स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी की प्रख्यात नेता लास पैशनारा उनकी प्रेरणा थीं, जिनपर उन्होंने अपना पहला लेख भी लिखा था। 1936-37 में ही राजनीतिक गतिविधियों में अपनी सक्रिय भागेदारी की वे

शुरूआत कर चुकी थीं। बम्बई और उसके आस-पास महिला आन्दोलन की वे संगठनकर्ता ओर नेता बनकर उभरीं। 1939 में उन्होंने कामरेड बी. टी.आर. से विवाह किया। विवाह आनन-फानन में किया गया क्योंकि तुरन्त गिरफ्तारी से बचने के लिए बी. टी. आर. को भूमिगत हो जाना था। "उसी रात वे भूमिगत हो गये और वे कहां हैं इसकी जानकारी किसी को नहीं थी", कामरेड विमल दी लिखतीं हैं।

1940 में गिरनी कामगार यूनियन के मजदूरों की आम हड़ताल में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभायी। 40 दिन तक चली इस हड़ताल में मजदूरों के लड़ाकू तेवर खासतौर पर महिला मजदूरों का लड़ाकूपन उल्लेखनीय था। बाद की अपनी जिन्दगी में जब उन्होंने अपने समय और ऊर्जा का बड़ा हिस्सा महिला कामगारों को संगठित करने के लिए समर्पित कर दिया, गिरनी कामगार हताल में महिलाओं के द्वारा दिखाया गया जुझारूपन निश्चित रूप से उनके जहन में बार-बार ताजा होता रहा होगा.

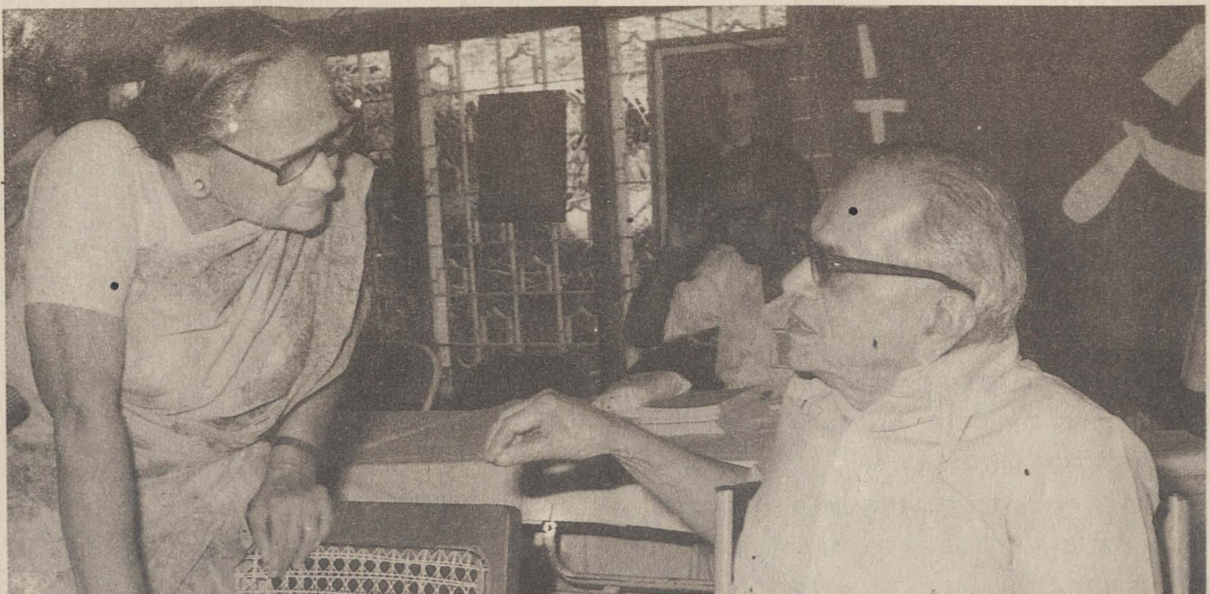

कामरे बी टी रणदिवे के साथ विमलदी : पांच दशक के साथी

1946 में भारत की आजादी के संघर्ष का लोकप्रिय उफान अपने चरम पर था। इस समय का नौसेनिक विद्रोह और बम्बई के मजदूर वर्ग के साथ ही अन्य जगहों पर ऐसे ही उभार हमारे स्वतंत्रता संग्राम के अविस्मरणीय बिन्दु हैं। इस दौर में जब बम्बई का मजदूर वर्ग शहर सड़कों पर ब्रिटिश पुलिस और फौज का मुकाबला कर रहा था, कामरेड विमल ने दूसरे नेताओं खासतौर पर महिला नेताओं के साथ मिलकर इस संघर्ष में शानदार भूमिका निभाई थी।

उन्हें 1948 में दूसरी बार गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय उनका बेटा उदय केवल 2 वर्ष का था। बहुत से दूसरे साथियों साथ जेल में जहां उन्हें लगभग दो वर्ष तक कैद रखा गया, उन्होंने 17 दिन तक भूख हड़ताल की। 1962-64 के भारत-चीन सीमा विवाद के दौरान उन्हें एक बार फिर गिरफ्तार कर लिया गया और दो वर्ष तक जेल में रखा गया। इन्दिरा गांधी द्वारा लगाये गये आपातकाल के दौरान कामरेड बी.टी.आर. के साथ उन्हें भूमिगत हो जाना पड़ा था।

इसके पूर्व, एक ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता के तौर पर नहीं बल्कि एक महिला कार्यकर्ता के तौर पर मजदूर बर्ग के संघर्षों में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी यह 1967-68 का दोर था जब अपने कलकत्ता प्रवास के दौरान वे संगठनात्मक रूप से ट्रेड यूनियन आन्दोलन के साथ जुड़ीं ओर समय के साथ उसके मुख्य नेताओं में से एक होकर उभरीं। उन्होंने प्लान्टेशन सैक्टर का काम अपने हाथ में लिया और जब सीटू प्लान्टेशन वर्कर्स फेडरेशन की स्थापना हुई तो वे उसकी महासचिव चुनीं गयीं। बाद को वे इस संगठन की अध्यक्ष बनीं ओर अन्तिम सांस लेने तक इस पद पर रहीं।

जब सीटू ने कामगार महिलाओं को संगठित करने के काम पर खास तवज्जो देने का फैसला किया और कामगार महिलाओं का पहला सम्मेलन, 1979 में मद्रास (चैन्नई) में आयोजित हुआ। तब सीटू के तहत आल इंडिया वर्किंग वूमेन की जो कोआर्डिनेशन कमेटी बनी, विमल रणदिवे को उसका संयोजक चुना गया। वे अंत तक अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह बखूबी करती रहीं। उन्हें जेन्डर और वर्ग के सवालों को एक दूसरे के साथ जोड़ने में

शेष पृष्ठ 11 पर

अपने संगठन को मजबूत करो

जब बन ही गया अपना संगठन
इसको मज़बूत बनाने का वादा करो -2
चार दिनों की सहेली, सहेली नहीं,
उम्र भर साथ निभाने का वादा करो ।

1. सवाल महिला के शोषण का आये कभी
खूब चर्चा चलाने का वादा करो,
उम्र भर साथ निभाने का वादा करो
चार दिनों की सहेली, सहेली नहीं,
उम्र भर साथ निभाने का वादा करो
जब बन ही गया अपना संगठन
इसको मजबूत बनाने का वादा करो।

2. मुश्किलें संगठन चलाने में आये कभी
संगठन मजबूत बनाने का वादा करो
उम्र भर साथ निभाने का वादा करो
चार दिनों की सहेली, सहेली नहीं,
उम्र भर साथ निभाने का वादा करो-
जब बन ही गया अपना संगठन
इसको मजबूत बनाने का वादा करो।

3. आज औरतें किसी से कम तो नहीं
ऐसी हिम्मत जगाने का वादा करो
उम्र भर साथ निभाने का वादा करो
चार दिन की सहेली, सहेली नहीं,
उम्र भर साथ निभाने का वादा करो
जब बन ही गया अपना संगठन
इसको मजबूत बनाने का वादा करो।

-देवकी शर्मा
(आंगनवाड़ी वर्कर, हिमाचल प्रदेश)

चीनी क्रांति के पचास साल

पहली अक्टूबर को चीनी क्रांति की पच्चासवीं सालगिरह है। लोक जनतांत्रिक गणराज्य की स्थापना के पचास वर्ष पूरे हो गये हैं। महान अक्टूबर क्रांति तथा फासीवाद पर विजय के बाद, चीनी क्रांति वह तीसरी सबसे बड़ी घटना थी जिसका विश्व घटनाविकास पर गहरा व स्थायी असर पड़ा है।

आज जो चीन हम देखते हैं, पूरा बदल चुका है, पचास साल पहले चीन एक अर्द्ध-सामंती तथा अर्द्ध-औपनिवेशक देश था, जिसे साम्राज्यवादियों तथा स्थानीय प्रतिक्रियावादी ताकतों द्वारा बांटा और लूटा जाता रहा था।

चीनी क्रांति के सफल होने तथा चीन लोक जनवादी गणराज्य की स्थापना के तुरन्त बाद चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने धीरे-धीरे जनतंत्र से समाजवाद में संक्रमण संपन्न करने, देश की अर्थव्यवस्था का तेजी से पुनर्निर्माण करने तथा उसका विकास करने और सबसे बढ़कर देश के अधिकांश हिस्सों में उत्पादन के साधनों के समाजवादी रूपांतरण को संपन्न करने का काम हाथ में लिया।

क्रांति के बाद के पहले कोई दो वर्षों में ही 70 करोड़ एकड़ भूमि 30 करोड़ किसानों में बांटी जा चुकी थी. कृषि सुधारों ने भूमि के स्वामित्व पर दो हजार वर्ष से चली आती इस सामंती जकड़बंदी को खत्म कर दिया, जो प्रतिक्रियावादी ताकतों की शक्ति का मुख्य आधार बनी रही थी।

चीनी क्रांति में माओ त्से तुंग ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी. वह संघर्ष में विचारधारात्मकयोग दे रहे थे और चीनी जनता को राजनीतिक नेतृत्व दे रहे थे. उनके नेतृत्व में चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी ने चीन के उस समय के ठोस हालात का गहरा अध्ययन किया था और इस अध्ययन के आधार पर अपने नारे निकाले थे।

क्रांति के बाद इन पांच दशकों में चीन में जनता के जीवन स्तर में भारी सुधार आया है। चीन वासियों में जनता के जीवन स्तर में भारी सुधार आया है। चीन वासियों को औसत वास्तविक उपभोग 1952 के 80 युवान प्रति व्यक्ति से बढ़कर 1998 में 2,973 युवान पर पहुंच चुका था। नगरवासियों को अगर चीनी क्रांति के तुरंत बाद के वर्षों में जीवन यापन में अपने व्यय का 80 फीसद हिस्सा भोजन व कपड़ों पर ही खर्च करना पड़ता था, तो 1998 तक यह हिस्सा घटकर 55.6 फीसद ही रह गया था। ग्रामीण आबादी के लिए भी यही हिस्सा क्रांति के तुरंत बाद के 90 फीसद से ज्यादा से घटकर 1998 तक आते-आते 59.7 फीसद ही रह गया था।

चीनी जनता के जीवन स्तर में आया सुधार, औसत चीनी के

शेष सात पर

हरियाणा की बहादुर बेटी- सरोज वशिष्ठ

21 जुलाई- 1999 को 28 वर्षीय सरोज वशिष्ठ और उनकी 7 वर्षीया बेटी विशाका की हत्या कर दी गई। इस हत्याकांड के लिए जिम्मेदार उसके पति- जिसने जुर्म का इकबाल किया, और सामंती विचारधारा के प्रति गुस्से के आंसुओं से हमारी आंखें भरी हुई हैं। सरोज की हत्या किसी आम पारिवारिक झगड़े के कारण नहीं की गई थी। उसकी हत्या इसलिए की गई क्योंकि, अभी तक बड़े पैमाने पर हमारे समाज में व्याप्त सड़ी-गली सामंती विचारधारा के असर में जकड़े उसके पति को यह पसन्द नहीं था कि सरोज मजदूरों को संगठित करने, कामकाजी महिलाओं और अन्य महिलाओं को संगठित करने का कार्य करें उसका पति यह बर्दाश्त नहीं कर सका कि सरोज हरियाणा राज्य ट्रेड यूनियन आंदोलन के महत्वपूर्ण नेताओं में से एक के रूप में उभरी थी सरोज की मृत्यु हरियाणा राज्य के ट्रेड यूनियन आंदोलन को नहीं वरन आल इंडिया फेडरेशन ऑफ आंगनवाड़ी वर्कर्स एंड हैल्पर्स को भी बहुत बड़ा आघात लगा है।

– एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार में जन्मी सरोज को छोटी उम्र से ही परिवार की आय में योगदान करने की जिम्मेदारी उठानी पड़ी थी। उसने एक कपड़ा बुनने की मिल में काम करना शुरू किया था और उसी मिल के मजदूरों की सीटू से संबंधित यूनियन की गतिविधियों में सक्रिय भागेदारी शुरू की थी, जिसके लिए उसे नौकरी ने निकल दिया गया था। इसके बाद वे हरियाणा राज्य सीटू की होलटाइमर बन गयीं और उन्हें आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को संगठित करने का काम सौंपा गया। उनके अथक प्रयासों की बदौलत, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता जो बी एम एस की यूनियन से निराश हो चुके थे, सीटू के झंडे के नीचे आ गये। थोड़े समय में ही सीटू से संबंधित यह यूनियन, राज्य व्यापी असर रखने वाली ताकत बन गयी।

– मजबूत सामंती सामाजिक ढांचे वाले राज्य हरियाणा के एक सवर्ण जाति परिवार से ताल्लुक रखने के बावजूद सरोज ने परम्परा और परिवार की सामंती बेडियों को तोड़ते हुएअंतर्जातीय विवाह किया। उसका पति तब सीटू कार्यालय में काम करता था। सरोज, जहाँ आंदोलन के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध होने के चलते, संगठनात्मक गतिविधियों से और भी ज्यादा गहराई से जुड़ती गई, उसका पति न केवल आंदोलन से अलग-थलग होता गया बल्कि उसका यहाँ तक पतन हो गया कि वह सरोज को शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित करने लगा। घरेलू दबाव और प्रताड़ना के बढ़ते चले जाने के बावजूद सरोज ने संगठन की अपनी गतिविधियों जारी रखीं। इतनी घोर यातना सहने के बाद भी उसकी लगन और हंसमुख स्वभाव में कमी नहीं आई।

– सरोज एक प्रभावशाली वक्ता थी, एक ऐसी बहादुर महिला जो संघर्षों में हमेशा अगली कतार में रहती थी। राज्य में आंगनवाड़ी कर्मियों, और दूसरे क्षेत्रों के कर्मचारियों, कामकाजी महिलाओं के संघर्षों का नेतृत्व करते हुए उसे कई बार गिरफ्तार किया जा चुका था और उनके खिलाफ कई मुकदमें बना दिये गये थे। यह बहुत था और उनके खिलाफ कई मुकदमें बना दिये गये थे। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि ऐसी बहादुर महिला को सामंती सामाजिक दबावों के चलते दुखद-वैवाहिक जीवन झेलने को मजबूर होना पड़ा। सरोज का जीवन, आज के सामंती विचारों के प्रभुत्व वाले समाज में महिला कार्यकर्ताओं को जो असहनीय दबाव झेलने पड़ते हैं, उसकी आखें खोल देने वाली दास्तान है। इस सामंती विचारधारा के खिलाफ हमारा जबर्दस्त प्रतिबद्ध संघर्ष ही सरोज को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

– पहली अगस्त को, राज्य आंगनवाड़ी यूनियन, ए आइ डी डब्ल्यू की राज्य इकाई, सीटू की राज्य कमेटी और सर्वकर्मचारी संघ द्वारा रखी गई शोक सभा में हजारों मजदूरो, कर्मचारियों और बहुत बड़ी तादाद में महिलाओं का सैलाब उमड़ा। इस सभा में यह फैसला किया गया कि सरोज की याद में एक ऐसे केंद्र की स्थापना की जायेगी, जो विभिन्न किस्म की हिंसा की शिकार महिलाओं की मदद करेगा। □

आंगनवाड़ी समाचार

हिंदीभाषी राज्यों में काम कर रहे आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए केंद्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

मध्यप्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, बिहार आदि हिंदीभाषी राज्यों में कार्यरत आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ताओं के लिए 10-12 जुलाई को दिल्ली में केन्द्रीय स्तर के स्कूल का आयोजन किया, जिसमें छः राज्यों के 33 कामरेडों ने भाग लिया।

स्कूल में भाग लेने वाले लगभग सभी कार्यकर्त्ता जिला कमेटियों, राज्य कमेटियों या विभिन्न यूनियनों के पदाधिकारी थे, सभी साथियों ने स्कूल में दिए गए वक्तव्यों को बड़े ध्यानपूर्वक सुना और चर्चा में भी सक्रिय रूप से हिस्सा लिया।

सीटू केन्द्र की ओर से का. रंजना निरुला ने ''भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका ओर ट्रेड यूनियन'' तथा का. डब्ल्यू. आर. वरदराजन ने ''समकालीन ट्रेड यूनियन आंदोलन और सीटू की भूमिका'' विषय पर अपने वक्तव्य पेश किए। का. इंद्राणी मजूमदार ने ''मजदूर आंदोलन के लिए अर्थशास्त्र'' और का. इंदु अग्निहोत्री ने ''जातिवादी और सांप्रदायिक ताकतों से मजदूर आंदोलन को खतरे'' विषय पर अपने विचार रखे। सत्र के बाद समूहिक चर्चा और प्रश्न-उत्तर में साथियों ने भाग लिया।

अंतिम दिन ए आइ एफ ए डब्ल्यू एच की महासचिव का. हेमलता ने ''संगठन निर्माण'' विषय पर एक कार्यशाला संचालित की। कार्यशाला का उद्देश्य हिंदीभाषी राज्यों में आंदोलन की कमियों की पहचान और फिर उन कमियों को दूर करने के रास्ते की तलाश के बाद संगठन को मजबूत करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने का फैसला किया गया।

1. सी डी पी ओ को अगस्त महीने में स्थानीय समस्याओं के विषय में प्रतिनिधित्व दिया जाएगा।

2. सदस्यता बढ़ाने और अन्य क्षेत्रों तथा जिलों में संगठन के काम के विस्तार के लिए विशेष प्रयास किए जाएंगे।

3. भाजपा सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ पर्चा बांटा जाएगा।.

4. सक्रिय कार्यकर्त्ताओं के लिए राज्य-स्तर पर प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाएगा।

स्कूल में पर्चा लेखन, गीत गायन आदि प्रतियोगिता भी की गई जिसमें छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया इसके अलावा पंजाब के साथियों ने पंजाबी लोकनृत्य ''गिद्धा'' भी पेश किया। सीटू के सचिव का. कन्हाई बनर्जी ने प्रतियोगिता के पुरुस्कार वितरित किए। समापन भाषण में का. बनर्जी ने संगठन को मजबूत बनाने, आम सदस्य को राजनैतिक रूप से शिक्षित बनाने और सीटू के संघर्षों में भाग लेकर शोषण विहीन समाज के निर्माण में जुटने के लिए कार्यकर्त्ताओं का आह्वान किया। का. हेमलता ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया। शिविर की समाप्ति ''हम होंगे कामयाब'' गीत के साथ हुई।

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र की शिवसेना-भाजपा सरकार को चुनाव के समय वादे और बाद में उन्हें भूल जाने की कला में महारत हासिल है। लगभग दो बरस पहले मनोहर जोशी सरकार ने घोषणा की थी कि वो आंगनवाड़ी वर्करों को रुपये 2,000 प्रतिमाह देंगे। अन्य यूनियनों ने जोशी की इस घोषणा का स्वागत किया था लेनिन सीटू संबंधित ''आंगनवाड़ी कर्मचारी संगठन'' ने उसी वक्त ये कहा था कि इस घोषणा को लागू करवाने के लिए आंगनवाड़ी वर्करों को संघर्ष करना पड़ेगा। यूनियन की बात सही साबित हुई है दो सालों के अथक प्रयासों ओर संघर्षों के बावजूद भी राज्य सरकार ने आंगनवाड़ी वर्करों को अतिरिक्त धन मुहैया नहीं कराया है। आंदोलन के दबाव के चलते सरकार ने एक समिति का गठन तो जरूर किया लेकिन उसकी सिफारिशों पर ध्यान नहीं दिया। अंततः सरकार ने आंगनवाड़ी वर्करों के लिए 225 रुपये और हैलपरों के लिए 115 रुपये वृद्धि की घोषणा की। लेकिन इसके लिए भी अभी तक सरकार की ओर से कोई आदेश जारी नहीं हुआ है, कुछ दिन पहले यूनियन प्रतिनिधियों के एक ज्ञापन के जवाब में कल्याण विभाग के सचिव ने कहा कि वो कमेटी की सिफारिशों पर विचार कर रहे हैं लेकिन 225 रुपये और 115 रुपये की वृद्धि के विषय में कोई बात नहीं कही।

आंगनवाड़ी कर्मचारी संगठन (सीटू) की राज्य कमेटी ने 29 जुलाई को नागपुर में बैठक कर आंदोलन की समीक्षा की।

बैठक में हुई चर्चा से ये साफ था कि सारे राज्य में आंगनवाड़ी वर्करों में राज्य सरकार के प्रति गहरा आक्रोश है। बैठक में राज्य समिति ने अपने आंदोलन के विस्तार करने के साथ-साथ लोकसभा

और विधानसभा चुनावों में शिवसेना-भाजपा को परास्त करने के लिए प्रचार करने का फैसला किया। इसके अलावा संगठन को मजबूत बनाने के लिए यूनियन कार्यकर्त्ताओं को राजनैतिक रूप से प्रशिक्षित करने का आह्वान किया गया गया। राज्य समिति ने 28-29 सितंबर को चंद्रपुर में राज्य स्तरीय प्रशिक्षण शिविर लगाने का फैसला किया यह फैसला अमल में लाया गया - करीब 35 वर्कर तथा सहायकाओं ने शिविर में हिस्सा लिया जो 5 जिलों से आई थी। यह तय हुआ कि हर जिले में 21 अक्टूबर के दिन धरना रखा जायगा, सरकार के आश्वासनों की पूर्ति की मांग को लेकर सदस्यता बढ़ाने के साथ-सांथ नवंबर माह के अंत तक सदस्यता अभियान को पूरा करने का फैसला भी किया। राज्य समिति सदस्यों ने हिंदी ''पत्रिका'' की 300 कापियां भी खरीदीं। राज्य समिति की महासचिव का. किरन मोघे ने गतिविधियों पर राज्य समिति की रिपोर्ट पेश की। बैठक में ए आइ एफ ए डब्ल्यू एच की महासचिव का. हेमलता, सचिव का. ए. आर. सिंधू और सीटू राज्य सचिव का. विवेक मोंटरियो ने भी भाग लिया।

बिहार

बिहार में आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ताओं और हैल्पर्स की जिन्दगी वास्तव में दयनीय है। राज्य में आई सी डी एस प्रोजेक्ट्स में कार्यरत 1000 आंगनवाड़ी कर्मियों पर काम का बोझ राज्य सरकार बढ़ाती जा रही है। लेकिन अतिरिक्त कार्य के लिए एक पैसा भी उन्हें ज्यादा देने के लिए राज्य सरकार तैयार नहीं है। वे लाभ भी, जिन्हें पाने के आंगनवाड़ी कर्मी हकदार हैं, वे भी उन्हें नहीं दिये जा रहे। बहुत सारे जिलों में तो प्रसूति अवकाश तक नहीं दिया जाता। कुछ जिलों में तो महिलाओं को यह पता तक नहीं है कि वे तीन महीने के प्रसूति अवकाश की हकदार हैं। और अनभिज्ञता की ऐसी स्थिति में बच्चे को जन्म देने के तीन दिनों के भीतरही काम पर लौट आती हैं, क्योंकि उन्हें डर है कि छुट्टी करने की स्थिति में कहीं उनका मानदेय न मारा जाये। उन्हें मानदेय भी नियमित रूप से नहीं दिया जाता है। मासिक बैठकों में भाग लेने के लिए दिये जाने वाला यात्रा भत्ता और दैनिक भत्ता समय पर नहीं दिया जाता और इसका भी एक हिस्सा अधिकारी वितरित करते समय हड़प लेते हैं। बहुत सारे प्रोजेक्ट्स में कई महीनों से पूरक पोषण की सप्लाई नहीं की जा रही जिसके लिए गरीब आंगनवाड़ी महिलाओं को गांव वालों के गुस्से का शिकार होना पड़ रहा है। कभी-कभी जब यह पोषण दिया भी जाता है तो वह इस कदर खराब होता है कि उसमें कीड़े रेंगते हैं और बच्चे ऐसा खाना खाने से इन्कार कर देते हैं। जहाँ हजारों शिक्षित ओर योग्य आंगनवाड़ी कार्यकर्ता हैं वहां भी राज्य सरकार आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के बीच से सुपरवाइजरों की नियुक्ति करने के केंद्र सरकार के निर्देश की अवहेलना कर रही है।

-पिछले कई वर्षों से आंगनवाड़ी कर्मी अतिरिक्त काम के लिए अतिरिक्त मानदेय और कर्मियों को नियमित करने की मांगों को लेकर संघर्ष करते आ रहे हैं मगर राज्य सरकार बराबर यह कहकर अपना पल्ला झाड़ती आ रही है कि यह योजना केंद्र सरकार की है और उसका इससे कोई लेना-देना नहीं है।

- यूनियन की राज्य कमेटी ने 20 जुलाई की पटना बैठक में आंगनवाड़ी कर्मियों की इन समस्याओं की चर्चा करने के साथ संघर्ष और इस बारे में राज्य सरकार की प्रतिक्रिया की समीक्षा की। ए आइ एफ ए डब्ल्यू एच की महासचिव, हेमलता, सीटू की बिहार राज्य कमेटी की महासचिव जे एस मजूमदार, सीटू के राज्य उपाध्यक्ष, जोगिन्द्रर प्रसाद और राज्य सरकार के कर्मचारियों के नेता राधारमन सिन्हा ने बैठक में भाग लिया। संगठन की राज्य यूनियन की महासचिव शान्ति मिश्रा ने रिपोर्ट पेश की। चर्चा के बाद यह तय किया कि स्थानीय समस्याओं को लेकर महिला कल्याण सचिव से मिलकर उन्हें ज्ञापन सौंपा जायेगा। बैठक में प्रोजेक्ट स्तर पर संगठन के ढांचे को दुरुस्तीकरन और सदस्यता बढ़ाने का भी फैसला लिया गया। कमेटी ने फैसला किया कि चुनावों के बाद एक राज्यव्यापी अभियान चलाया जायेगा। सर्वसम्मति से यह भी फैसला किया गया कि यूनियन को सीटू से संबंधित कराया जाये।

आंध्र प्रदेश

12 जुलाई, 1999 को आंध्र प्रदेश के कोने-कोने से आये 10 हजार से ज्यादा आंगनवाड़ी कर्मी हैदराबाद के इंदिरा पार्क में जमा हुए। आंगनवाड़ी कर्मी माँग कर रहे थे कि दो वर्ष पूर्व, त्यौहार भत्ता, अतिरिक्त काम के लिए अतिरिक्त मानदेय और ग्रुप इन्शयोरेन्श के लिए मुख्यमंत्री ने जो वादे किये थे उन्हें पूरा किया जाये। दिये गये आश्वासनों को पूरा करने की बजाय मुख्यमंत्री ने इस दौर में बराबरयह कोशिश की है कि आई सी डी एस स्कीम को लागू करने की जिम्मेदारी से किस प्रकार बचा जाये। जहाँ 1996 में इस बारे में सरकार ने अपने एक आदेश के जरिये आई सी डी एस प्रोजेक्ट्स को गैरसरकारी संगठनों को सौंपने की बात की थी, 1998 में सरकार ने आई सी डी एस को स्थानीय मदर कमेटियों को सौंपने की कोशिश की। लेकिन आंगनवाड़ी कर्मी एकजुट होकर खड़े रहे और दोनों ही अवसरों पर उन्होंने सरकार के मंसूबों को कामयाब नहीं होने दिया। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री के लिए यह तगड़े झटके थे खासतौर पर उस स्थिति में जब अन्य क्षेत्रों में निजीकरण की अपनी मुहिम को उसने विरोध को दबाते हुए आगे

बढ़ाया। मुख्यमंत्री आसानी से इस तथ्य को पचा नहीं पाये और आंगनवाड़ी कर्मियों की यूनियन और उन्हें संगठित करने वाली सीटू के प्रति मुख्यमंत्री का रवैया ठीक नहीं रहा है। उनके द्वारा एक आम सभा में सार्वजनिक रूप से किये गये वादों को पूरा करने की माँग पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। यहाँ तक कि अफसरों के प्रस्तावों पर भी ध्यान नहीं दिया गया। इसके चलते आंगनवाड़ी वर्कर्स में रोष व्याप्त था और उन्होंने प्रदेश के कोने-कोने से हैदराबाद के लिए कूच किया। वे आर टी सी क्रॉस रोड पर जम गये और बारिश के बीच नारेबाजी करते रहे। मुख्यमंत्री जो महिला विकास और सबलीकरण के बारे में बड़ी-बड़ी बातें करने से नहीं चूकता आँगनवाड़ी नेताओं के प्रतिनिधिमंडल से मिलना भी गवारा नहीं किया। और अंततः जब उन्होंने मुख्यमंत्री को पकड़ लिया तो उसने बहाना लगाया कि चूंकि उसी तारीख पर चुनाव घोषित हो गये हैं इसलिए अभी कुछ नहीं किया जा सकता। हालांकि पुलिस महिलाओं को तितर बितर करने के लिए जलतोप का इस्तेमाल करने का साहस नहीं जुटा पायी, मगर उसने सीटू और खेतमजदूर यूनियन के दर्जनों नेताओं के ऊपर जो आंगनवाड़ी कर्मियों के समर्थन में सड़क पर उतरे थे, मकदमें बनाये। कुछ को तो अगले दिन गिरफ्तार किया गया।

राज्य सरकार के इस रवैये के खिलाफ यूनियन की राज्य कमेटी और सीटू ने राज्यव्यापी विरोध प्रदर्शन आयोजित करने का आह्वान किया। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता जो 6 घंटे तक बारिश में बैठे सरकार की प्रतिक्रिया का इंतजार करते रहे थे, बहुत गुस्से में थे और उन्होंने घोषणा की कि आनेवाले लोकसभा चुनाव में चन्द्रबाबू की पार्टी तेलगु देशम को सबक सिखाया जायेगा।

पश्चिम बंगाल

13 जुलाई को पश्चिम बंगाल के लगभग सभी जिलों के प्रोजेक्टस में आंगनवाड़ी कर्मियों ने मांग दिवस मनाया। अलग अलग क्षेत्रों में लोग एक जगह इकट्ठे हुए और ज्ञापन देने के लिये जुलूस की शक्ल में सी. डी. पी. कार्यालय पर पहुंचे। कलकत्ता में तमाम प्रोजेक्ट अतिरिक्त निदेशक के कार्यालय पर जमा हुए। जहां पर एक अल्पकालिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें ज्ञापन और मांगों के अपर महासचिव ने अपने विचार व्यक्त किये। महासचिव समेत 9 प्रोजेक्टस के एक-एक प्रतिनिधि को साथ लेकर एक दस सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल अतिरिक्त निदेशक से मिला। निदेशक ने बहुत सारी मांगों के बारे में आश्वासन दिया और कहा कि प्रोजेक्टस को स्थानीय निकायों को सौंपने के सवाल पर बाद में चर्चा की जायेगी।

इसी दिन आई सी डी एस यूनियन की पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी की ओर से उपनिदेशक को भी एक ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में उठायी गई मांगें इस प्रकार थीं:-

1. कर्मियों को नियमित करो। नियमित किये जाने तक हैल्पर्स को 1200 रुपये और वर्कर्स को 2000 रुपये मानदेय दो

2. पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा मानदेय में, नवम्बर 1998 से लागू 200 रुपये की जो वृद्धि की गई, उसे नियमित मासिक मानदेय के साथ नहीं दिया जा रहा। इसे प्रत्येक महीने दिया जाना चाहिये। ऐसी स्थिति कलकत्ता, हावड़ा, हुगली, 24 परगना (उत्तर-दक्षिण) और मालदा में है।

3. ऐसे बहुत से प्रोजेक्ट्स हैं जहाँ सी डी पी ओ के पद रिक्त पड़े हैं। इन्हें तुरन्त भरा जाना चाहिए।

4. बहुत से आंगनवाड़ी केंद्र खाली पड़े हैं। कहीं-कहीं पर एक वर्कर दो केंद्रों पर कार्यकर रही है और उसे मात्र 50 रुपये मासिक मिल रहे हैं। हम मांग करते हैं कि आंगनवाड़ी वर्कर्स के पदों के लिए इम्तिहान की अधिसूचना तुरन्त जारी की जाये। परीक्षा में सफल उम्मीदवारों की नियुक्ति करे रिक्त पदों को भरा जाये।

5. हाल ही में एक अखबार में छपी रिपोर्ट के मुताबिक विश्व बैंक ने भारत सरकार को पांच राज्यों में आइ सी डी एस प्रोजेक्ट्स की बेहतरी के लिए 38.57 करोड़ डालर का आसान कर्जा दिया है। हमारी मांग है कि यह अन्य राज्यों को भी दिया जाये।

प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व आल इंडिया फेडरेशन आफ आंगनवाड़ी वर्कर्स एंड हैल्पर्स के कार्यकारी अध्यक्ष कामरेड भाबातोष राय ने किया और सभा को ए आइ एफ उब्लू ए एच अध्यक्षा नीलिमा मैत्रा ने संबोधित किया।

पेज तीन से

घर में पाये जाने वाले घरेलू अपयोग के सामानों से पहचाना जा सकता है. 1998 में हरेक 100 शहरी परिवारों पर 105.4 रंगीन टेलीविजन सैट थे, 98.6 धुलाई मशीनें थी और 76.1 रेफ्रिजरेटर थे. दूसरे और हरेक 100 ग्रामीण परिवारों पर 96 टेलीविजन सैट थे, 23 धुलाई मशीनें थी और 9 रेफ्रीजरेटर थे.

समाजवादी क्रांति के पांच दशकों में चीन के आम मेहनतकशों के जीवन में आये भारी सुधार से और समाजवादी चीन के अन्य उपलब्धियों से, मार्क्सवाद-लेलिनवाद के बुनियादी सिद्धांतों की वैधता साबित होती है. इसीलिए, चीन का अनुभव जनता के जनतंत्र व समाजवाद के लिए संघर्ष में लगे लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है. □

राज्य	मानदेय						त्यौहार भत्ता अग्रिम/ बोनस एक्स ग्रेसिया			सुपर वाईजर पद में आरक्षण	अन्य पदों में आरक्षण	प्रसूति अव-काश	अन्य अव-काश	अन्य सुविधाएं
	वर्कर			हेल्पर										
	केंद्र सरकार	राज्य सरकार	कुल रुपये	केंद्र सरकार	राज्य सरकार	कुल रुपये		वर्कर	हेल्पर					
1.पश्चिम बंगाल	रु. 438 से रु. 563	200	638 से 763	260	200	460	एक्स ग्रेसिया	1,0000	800	–	–	3 महीने	–	–
2. केरल	“	“	“	“	“	“	त्यौहार भत्ता	450	400	–	–	3 महीने	–	कल्याण कोष
3. त्रिपुरा	“	330	768 से 893	“ “	250	510	एक्सग्रेसिया का भाग + अग्रिम भाग	250 + 750	250 + 750	–	40%सहायक शिक्षा अधिकारी आ. कर्मचारी स्कूल मदर 15% और सहायक	120 दिन	–	–
4. पांडिचेरी	“	200 + 500	1138 से 1263	“	125+ 300	685	–	–	–	–	–	3 महीने	–	–
5. तमिलनाडू	“	–	1000	“	–	500	बोनस	725	–	–	–	3 महीने	–	वर्दी भत्ता-500 1 लाख बीमा
6. पंजाब	“	200	638 से 763	“	100	360	–	–	–	100%	–	3 महीने	–	–
7. हिमाचल प्रदेश	“	200	638 से 763	“	100	360	–	–	–	100%	–	3 महीने	–	–
8. हरियाणा	“	200	638 से 763	“	100	360	–	–	–	–	–	3 महीने	–	–
9. महाराष्ट्र	“	175	613 से 738	“	125	385	एक्सग्रेसिया	250	250	25%	–	3 महीने	ग्रीष्मा-वकाश	–
10. कर्नाटक	“	200	638 से 763	“	100	360	–	–	–	–	–	3 महीने	–	–
11. आंध्र प्रदेश	“	NIL	438से 563	“	NIL	260	–	–	–	50%	–	4 महीने	15दिन ग्रीष्मावकाश	–

एक बीड़ी मजदूर की जिंदगी

आँसुओं से भरी आँखों के साथ अम्बोबाई ने कहा, ''मैं पिछले 35 वर्षों से बीड़ी बनाने का काम करती आ रही हूं...तब से, जब मेरी शादी भी नहीं हुई थी। मेरे हाथों को देखो... कितने कटे-फटे और खुरदरे हैं...मेरी पीठ और टांगों में लगातार दर्द रहता है और अब मैं पहले की तरह हर दिन 1500 बीड़ियों नहीं बना पाती। अब मैं दिन में सिर्फ 800 से 1000 बीड़ियाँ लपेट पाती हूँ, जिसका मतलब है मात्र ती रूपये कमा पाना। इसमें गुजारा कब तक चल सकता है?''

अम्बोबाई की उम्र 45 वर्ष है। वह 10 वर्ष की थी तब से बीड़ी बना रही है। वह अपने तीन बच्चों के साथ शोलापुर की झोपड़ पट्टी में रहती है। उसका पति जो एक हथकरघा मजदूर था 4 वर्ष पहले गुजर चुका है। तब से अम्बोबाई किसी तरह अपने परिवार को जिन्दा रखने के संघर्ष में लगी हुई है। उसके पन्द्रह और बारह वर्ष के दो बेटे सवेरे साढ़े सात बजे से दोपहर बाद दो बजे तक एक छोटे से रेस्तरां में काम करते हैं। जिसके लिए उन्हें मात्र दस-दस रुपये मिलते है। अम्बोबाई ने अपने सबसे छोटे बेटे को जो अभी दस वर्ष का है। हाल ही में स्कूल भेजना शुरू किया है।

उसने बताया कि काम तो नियमित मिल जाता है मगर एक हजार बीड़ी लपेटने का काम जहाँ 39 रुपये है वहाँ ठेकेदार तरह-तरह के बहाने बनाकर 9 रुपये काट लेता है। जैसे छाँट (बेकार) के नाम पर और सिर्फ 30 रुपये देता है। ये तीस रुपये भी रोज नहीं मिलते, सप्ताह के अंत में मिलते हैं। इसलिये रोजमर्रा जीवनयापन के लिये उसे उधार लेना पड़ता है और इस उधार के ऊपर लगने वाले ब्याज की दरें 10 से 20 प्रतिशत प्रति महीने जितनी ऊँची होती है। वह हर महीने 150 रुपये झोंपड़ी का किराया, 30 बिजली के और 20 रुपये सामुहिक नल से पानी लेने के लिये देती है। उसके परिवार में चावल से ज्यादा रोटी खायी जाती है। उसके घर में एक किलो आटा रोज लगता है। उसके पास राशन कार्ड तो है पर उसे आटा 11 रुपये प्रतिकिलो के भाव से खरीदना पड़ता है क्योंकि राशन में मिलने वाला अनाज बहुत ही खराब किस्म का होता है। अम्बोबाई के परिवार में रोजाना दाल पर पांच रुपये और चाय पर दस रुपये खर्च होते हैं। महीने भर चलाने के लिये, खरीदी जाने वाली साबुन की एक टिकिया पर पांच रुपये खर्च होता हैं।

''पचास रुपये की रोजाना की आमदनी में दो जून की रोटी जुटा पाना बहुत मुश्किल है। मैं तो ये ही प्रार्थना करती हूं कि हम में से कोई बीमार न पड़ जाये...नहीं तो दवा के लिये पैसा कहाँ से आयेगा।''

अम्बोबाई सुबह पांच बजे उठती है। उसके बाद घर का कामकाज करती है जिसमें कई घंटे लगते हैं। उसके बेटे सिर्फ चाय पीकर सुबह 7 बजे बाद दोपहर में लौटते हैं।

अम्बोबाई बीड़ी लपेटने का काम सुबह 10 बजे शुरू करती है। दोपहर को एक ही वक्त में, रात और दोपहर का खाना बनाती है। शाम तीन बजे वह अपने पूरे परिवार के लिए चाय बनाती है जिसके बाद बच्चे खेलने निकल जाते हैं और वह फिर अपने बीड़ी लपटने के काम में जुट जाती है। रात 10 बजे तक वह बीड़ियाँ लपेटती जाती है। उसके बाद खाना खाकर वह 11 बजे रात को सोने जा पाती है।

अम्बोबाई को अपने सभी बेटों को स्कूल में न भेज पाने का खेद है, मगर तब सवाल यह है कि, यदि दो बड़े बेटे काम न करें तो घर कैसे चलेगा। उसने अभी हाल ही से यूनियन की गतिविधियों में हिस्सा लेना शुरू किया है, क्योंकि जब वह जिन्दा था, तो उसके पति ने उसको कभी घर से बाहर नहीं जाने दिया। वह कहती है, ''दूसरों के साथ यूनियन के काम में शामिल होना मुझे अच्छा लगता है, लेकिन जब मैं पूरे दिन घर से बाहर होती हूं तो बीड़ियाँ नहीं बन पातीं। जिसका मतलब होता है कि कभी-कभी हम रोजका खाना भी नहीं जुटा पाते। मैं तो भूखी रह सकती हूं मगर मेरे बच्चों का भूखा रहना... ?''

अम्बोबाई की जिंदगी कई राज्यों के 50 लाख से भी ज्यादा बीड़ी मजदूरों की जिंदगी से अलग नहीं है। वह देश में महिलाओं द्वारा अपने कंधों पर सम्भाले जा रहे 30 प्रतिशत परिवारों में से एक है। यूनियन जहाँ बीड़ी मजदूरों के लिए ज्यादा दाम और फायदों के लिए लड़ती है वहीं अम्बोबाई के जैसे इन लाखों परिवारों को ही निवेश योजनाओं और सरकारी मदद की सबसे ज्यादा और फौरी जरूरत है। ताकि मेहनती अम्बोबाई और उसके बच्चे बेहतर जीवन जी सकें।

□

बैंगलूर में आंगनवाड़ी रैली

के. हेमलता, महासचिव आंगनवाड़ी फेडरेशन, बृन्दा कारात, महासचिव, एडवा

सीटू के अखिल भारतीय कामगार समन्वय समिति के लिए.......की ओर से 15 तालकटोरा रोड, नई दिल्ली –110001, सम्पादित और प्रकाशित एवं प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, ए–21, झिलमिल इंडस्ट्रिएल एरिया, शाहदरा दिल्ली–95 से मुद्रित